Marwari college, Darbhanga
Hand written lecture No. I
By
Dr. S.K. Suman (Asst. Prof.)
Dept. of Psychology. Marwari college, Darbhanga

Class - B.A, Part-I, Psychology (H), Paper-I
Unit- 4. Learning, Sub-topic- Experiments Conclusion of B.F Skinner, Some Major facts

Conclusion of Skinner's experiment:

Skinner के द्वारा किये गए प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकलता है कि operant behaviour (क्रिया प्रसूत व्यवहार) उद्दीपक (Stimulus) पर आधारित ना होकर अनुक्रिया पर आधारित होता है।

यदि किसी क्रिया को करने के बाद कोई बल प्रदान करने वाला उद्दीपन मिलता है तो अधिगम की शक्ति बढ़ जाती है। जैसे- किसी विद्यार्थी को परीक्षा में अच्छे अंक की प्राप्ति या किसी कार्य को करने पर उत्कृष्टता के लिए इनाम दिया जाता है या प्रशंसा की जाती है तो उसके कार्य करने की शक्ति में वृद्धि हो जाती है। और अनुक्रिया को दृढ़ करता है और पुनः उसी क्रिया को करने के लिए प्रेरित करता है।

अंत में सीखने वाला वांछित व्यवहार की जल्दी-जल्दी पुनरावृत्ति करके वैसा ही व्यवहार करने लगता है जैसा दूसरा उससे चाहता है। इस प्रकार अपेक्षित अनुक्रिया तथा पुनर्बलन इस सिद्धान्त के दो

मुख्य केन्द्र बिन्दु है और यही कारण है कि 'अनुक्रिया – उद्दीपक' के रूप में जाना जाता है।

इस प्रकार सीखने का सार Stimulus – Substitution नहीं है वरना प्रतिक्रिया में सुधार है।

Some Major facts regarding operant Conditioning:

What is Reinforcement (पुनर्बलन क्या है)

पुनर्बलन का तात्पर्य यह है कि किसी अनुक्रिया के बार-बार दुहराने की सम्भावना को बढ़ाना।

"(Reinforcement means that the Probability of the repetition of a certain response is increased.)

डब्ल्यू(W) एफ०(F) हिल के अनुसार - "पुनर्बलन

अनुक्रिया का परिणाम है जिससे भविष्य में उस अनुक्रिया के होने की सम्भावना बढ़ती है।"

"Reinforcement is of that response to occur in future Consequence of an occurance which increase the probability"

क्रिया प्रसूत व्यवहार को बल प्रदान करके वांछनीय व्यवहार करने में पुनर्बलन द्वारा भरपूर सहायता

मिलती है। व्यवहार अथवा अनुक्रिया के घटित होने पर उसका पुनर्बलन करने का तात्पर्य कुछ ऐसे प्रकार के आयोजन से है जिसके द्वारा उस प्रकार की अनुक्रिया अथवा व्यवहार के पुनः घटित होने की सम्भावना को बढ़ा दिया जाये।

अनुक्रिया अथवा व्यवहार को हम दो प्रकार से पुनर्बलन कर सकते हैं—

(1) धनात्मक पुनर्बलन (Positive Reinborcement)

यह वे उत्तेजक या उद्दीपन (Stimulus) हैं जो किसी परिस्थिति से जुड़ने पर सक्रिय अनुक्रिया की सम्भावना को बढ़ा देते हैं। जैसे - भोजन, पानी, लैंगिक सम्पर्क, धन-दौलत, मान-सम्मान, प्रशंसा, पुरस्कार एवं सामाजिक मान्यता आदि की प्राप्ति धनात्मक पुनर्बलन के उदाहरण हैं।

(2) ऋणात्मक पुनर्बलन (Negative Reinborcement) :-

यह वह उद्दीपक या उत्तेजना है जिसे किसी परिस्थिति से हटा लेने पर सक्रिय अनुक्रिया को बल मिलता है। जैसे - डाँट-फटकार, निन्दा, तीव्र आवाज, चमकीली तेज रोशनी, तेज गर्मी, बिजली का झटका तथा दण्ड आदि से बचना ऋणात्मक पुनर्बलन के उदाहरण हैं।

Scanned with CamScanner

बिजली का झटका (electric shock) चूहे के लिए नकारात्मक पुनर्बलन का कार्य करता है क्योंकि झटका लगने से उसे कष्ट होता है तथा वह उचित रास्ता अपनाने को बाध्य होता है। क्रिया प्रसून अनुबंधन द्वारा प्राणी को वांछित व्यवहार सिखाने की दिशा में पुनर्बलन अपनी भूमिका अच्छी तरह तभी निभा सकता है जबकि उसे सही प्रकार से प्रयोग में लाया जाये।

इस दृष्टि से पुनर्बलन का आयोजन निम्न चार प्रकार से किया जाता है

(i) निश्चित अनुपात अनुसूची (Fixed Ratio Schedule) :- इस अनुसूची में यह निश्चित करके पुनर्बलन दिया जाता है कि कितनी बार सही अनुक्रिया करने पर पुनर्बलन दिया जाये। उदाहरणार्थ, कबूतर के 50 बार सही चोंच मारने पर दाना देना अथवा 4:1 का तात्पर्य यह है कि 4 बार सही उत्तर देने पर केवल एक बार पुनर्बलन किया जाये।

(ii) निश्चित अन्तराल अनुसूची (Fixed interval Schedule) :- इस अनुसूची में सीखने वाले को एक निश्चित समयअन्तराल के बाद पुनर्बलन दिया जाता है। समयअन्तराल की यह अवधि एक मिनट, घण्टा, दिन, सप्ताह या महीना हो सकता है। उदाहरणार्थ किसी प्रयोग में हर 3 मिनट के बाद भोजन

Scanned with CamScanner

का कुछ अंश चूहे को देना, अथवा नौकर को एक सप्ताह के बाद वेतन देना अथवा निश्चित समय पर भोजन करना आदि।

(iii) शत-प्रतिशत अनुसूची (Cent-Percent Schedule):- इस अनुसूची में सीखने वाले की प्रत्येक सही अनुक्रिया या व्यवहार का पुनर्बलन किया जाता है। स्किनर के अनुसार इस प्रकार के पुनर्बलन से प्राणी किसी अनुक्रिया को अतिशीघ्र सीख लेता है। साथ ही, इस अनुसूची की एक परिसीमा भी है और वह यह है कि पुनर्बलन समाप्त कर देने पर अनुक्रिया भी शीघ्र ही लुप्त हो जाती है।

(iv) आंशिक पुनर्बलन अनुसूची (Partial reinforcement schedule):- इस अनुसूची के अनुसार पुनर्बलन करते समय सही या गलत अनुक्रिया को ~~करते समय~~ महत्व नहीं दिया जाता बल्कि अनिश्चित रूप में ही पुनर्बलन दिया जाता है।

अर्थात इसमें कभी पुनर्बलन कर दिया जाता है तो कभी पुनर्बलन को रोक लिया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पुनर्बलन किसी भी समय और कितनी ही अनुक्रियाओं के बाद किया जा सकता है। इसलिए इसे परिवर्तनशील पुनर्बलन भी कहा गया है।

Contd.